साल नव सै नब्बे मास नव, हुए रसूल को जब ।
रूह अल्ला मिसल गाजियों, मोमिन उतरे तब ॥१॥

महंमद साहब ने जो कुरान में ईसा रूह अल्लाह का अपनी उम्मत के साथ हजार वर्ष बाद आने को लिखा था उसी के अनुसार जब नौ सौ नब्बे वर्ष नौ महीने बीत गए तो ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानी मर्दों की जमात अर्थात् अपनी आत्माओं के साथ इस मिथ्या जगत में अवतरित हुए ।

सम्वत सोलह सै अड़तीसा, आसो सुदि चौदस में ।
जनम दिन श्री देवचन्द्र जी, प्रगटे इन समें ॥२॥

विक्रमी सम्वत १६३८ में आसो सुदी चौदस को देवचन्द्र जी का जन्म हुआ और उस तन में श्यामा महारानी प्रगट हुए ।

देस मारवाड़ में, उमरकोट है गाम ।
मतू महता कुंवरबाई, श्री देवचन्द्र प्रगटे इस ठाम ॥३॥

देवचन्द्र जी ने उमर कोट गाँव मारवाड़ देश में पिता मत्तू मेहता एवं माता श्री कुँवरबाई के घर जन्म लिया ।

तहां से आए कच्छ देस में, बीच महम्मदें दिया दीदार ।
पहुंचाय मजल को, किए खबरदार ॥४॥

जब सोलह वर्ष की आयु में उमरकोट गांव को छोड़ कर परमात्मा की खोज में कच्छ जा रहे थे तो श्री राजजी ने महंमद के रूप में दर्शन दिया और उनकी गठरी उठा कर जहां जाना चाहते थे वहां तक पहुँचाया और अदृष्ट होकर सावचेत कर दिया कि तुम्हारे परमात्मा तुम्हारे साथ हैं ।

कच्छ देस में आय के, खोज बड़ी करी ।
जब भोजनगर आय पहुंचे, तब वही इलाही उतरी ॥५॥

जब कच्छ में रह कर अपने परमात्मा की कई प्रकार से खोज के बाद भोजनगर में पहुँचे तो वहाँ हरिदास जी के द्वारा दिए हुए मंत्र के बाद बाल मुकुन्द जी की मूर्ति के अदृष्ट हो जाने पर, बाल मुकुन्द जी ने आकर जब इनके स्वरूप की पहचान करायी और बांके बिहारी के वस्त्रों की सेवा दी तो एक दिन उनकी सेवा करते समय अखंड ब्रज में राधिका जी के रूप में श्री कृष्ण जी के चितवनी में दर्शन हो गए ।

Nijanand App

हरवंस जी हरिदास के, रहे कोइक दिन ।
ता पीछे नौतनपुरी, सुना भागवत होय मगन ॥६॥

इस प्रकार कुछ दिन श्री हरदास जी के यहां भोजनगर में रहे और उसके पश्चात् अखण्ड बृज और रास का ज्ञान लेने के लिए नौतनपुरी में आकर मग्न होकर भागवत को सुना ।

चौदह वर्ष लों नेष्टाबंध, बचन ग्रहे सब सार ।
चालीस वर्ष की उमर में, हकें दिया दीदार ॥७॥

चौदह वर्ष नेष्टाबंध भागवत सुनने के बाद जब चालीस वर्ष की आयु हो गई थी तो श्रीमद् भागवत का कुल सार समझ चुके थे । आप हक श्री अक्षरातीत श्री राजजी महाराज ने आकर तब दर्शन दिए ।

सुनत भागवत देहुरे, तहां कहा तारतम ।
तुम आये हो अरस से, जगाओ अपनी आतम ॥८॥

जब चालीस वर्ष की आयु होने के पश्चात् श्याम जी के मंदिर में श्रीमद् भागवत सुन रहे थे तो सम्वत् १६७८ आसो सुदी एकादशी सोमवार के दिन प्रातः साढ़े आठ बजे श्री राजजी महाराज ने आकर दर्शन दिए और अपने स्वरूप और परमधाम की पहचान का ज्ञान ''तारतम'' कहा और यह भी बताया कि तुम परमधाम से आये हो, अपनी आतम को जगाओ ।

तुम आए ब्रज रास में, फेर तुम आए इत ।
रही खेल देखन की, तुमको इच्छा तित ॥९॥

तुम ही ब्रज, रास में माया का खेल देखने आए थे पर तुम्हारी वहां इच्छा पूर्ण न होने के कारण से फिर इस ब्रह्मांड में आये हो ।

तिस वास्ते इंड तीसरा, रचा तुम कारण ।
ए भागवत तुम को खुले, तुम ही करो रोसन ॥१०॥

इसलिए तुम्हारी इच्छा को पूर्ण करने के लिए यह तीसरा ब्रह्मांड बनाया है । इस भागवत के गुझ भेद तुम्हारे बिना कोई खोल नहीं सकेगा क्यों कि तुम ही मेरे साथ ब्रज और रास में थे । इसलिए उन अखंड लीलाओं को जाहेर कर मेरे स्वरूप की पहचान कराओ ।

बुलाय ल्याओ सैंयन को, अपने वतन निजधाम ।
इनको इत जगाय के, पूरो मनोरथ काम ॥११॥

मेरे स्वरूप और परमधाम की पहचान करा कर तथा परमधाम की बारह हजार आत्माओं को जगा कर उनकी सब मनोकामना पूर्ण कर परमधाम ले आओ ।

Nijanand App

मोको फेर न देखोगे, इन भाँत इन नैन ।
अन्दर तुम्हारे आऊंगा, पूछ लेओ अब बैन ॥१२॥

तब श्री राजजी महाराज ने कहा-और जो कुछ पूछना है आज पूछ लो, फिर इस प्रकार साक्षात् दर्शन नहीं होंगे और मैं ही तुम्हारे आकार के अंदर आकर बैठूंगा ।

हुकुम हक सुभान का, मूल श्री देवचन्द्र जी पर ।
ए जो खेल देखन को, साथ धाम से आए उतर ॥१३॥

सबसे पहले श्री देवचन्द्र जी को हक श्री राजजी महाराज का हुकम हुआ कि परमधाम से सुन्दर साथ खेल देखने के लिए माया में उतरे हैं, उनको बुला कर परमधाम ले आओ ।

तिनको बुलावने, मैं भेजे तुम को ।
खेल से जगाय के, प्यार करों इन सों ॥१४॥

उन आत्माओं को बुलाने के लिए मैं तुम को हुकम देकर भेज रहा हूँ । तुम उनको मेरे स्वरूप और परमधाम की पहचान करा कर मूल सम्बन्ध से इनसे प्यार करो ।

प्रमाण : ल्याओ बुलाए तुम रूह अल्ला, जो रूहें मेरी आसिक ।
रब्द किया प्यार वास्ते, कहियो केहेलाया हक ॥

(खिलवत प्रकरण १३, चौपाई १)

सम्वत सौलह सै अड़तीसे, आसो सुदि चतुर्दसी के दिन ।
प्रगटे देस मारवाड़ में, गांव उमरकोट उतपन ॥१५॥

सम्वत १६३८ आसो सुदि चौदस के दिन उमरकोट गांव मारवाड़ देश में श्री देवचन्द्र जी का जन्म हुआ ।

सम्वत सत्रह सै बारोत्तरे, भादों मास उजाला पख ।
चतुर्दसी बुधवारी भई, हुए धनी अलख ॥१६॥

सम्वत् १७१२ भादो सुदि चौदस बुधवार के दिन श्री देवचन्द्र जी ने नश्वर जगत का तन त्याग दिया।

बरस चौहत्तर में, न्यून भया एक मास ।
तब सौंप चले श्री मेहेराज को, उमत खासल खास ॥१७॥

तेहत्तर वर्ष ग्यारह महीने इस तन में लीला करी । तब ब्रह्मसृष्टि, जो खासलखास उमत है, उनकी जागनी का कार्यभार श्री मेहेराज ठाकुर को सौंप दिया ।

Nijanand App

सम्वत सोलह सै पचोतरा, भादो वदि चौदस नाम ।
पहर दिन चढ़ते बार रवि, प्रगटे धनी श्री धाम ॥१८॥

सम्वत् १६७५ में भादों वदि चौदस के दिन पोहोर दिन चढ़ते अर्थात् नौ बजे रविवार के दिन मेहराज ठाकुर का जन्म हुआ, उस तन में श्री राजजी प्रगटे ।

सम्वत सत्रह सै इक्यावना, सावन वदि चौथ में ।
रात पीछली घड़ी दोय में, आया फिरस्ता धाम सें ॥१९॥

सम्वत् १७५१ में सावन वदी चौथ में प्रातः जब रात्रि दो घड़ी बाकी थी अर्थात् साढ़े चार बजे धाम धनी अन्तरध्यान हो गये ।

तीज भई रात घड़ी चौद लों, उपरान्त चौथ भई जब ।
दोय घड़ी रात बाकी रही, समय अन्तर्ध्यान को तब ॥२०॥

जब तीज की रात्रि बीत गई और चौथ प्रारम्भ हो गई तो उस दिन प्रातः साढ़े चार बजे ब्रह्म मुहुर्त में आप धाम के धनी मेहराज ठाकुर के तन को त्याग कर अन्तरध्यान हो गये ।

बार था इत सुकर, रहे इत एक दिन ।
ता पीछे मंदिर मिने, पधराए मोमिन ॥२१॥

चौथ वाले दिन शुक्रवार का दिन था । एक दिन समाधिष्ट रूप में ही बंगला जी में विराजमान रहे। शनिवार प्रातः सब सुन्दरसाथ ने मिलकर उनको गुम्मट जी में पधरा दिया ।

बरस छेहत्तर में, कम दो मास दस दिन ।
देखा खेल यहां लों, फिरे तरफ वतन ॥२२॥

छेहत्तर वर्ष में दो महीने दस दिन कम तक इन्द्रावती की आतम ने इस तन में बैठ कर खेल को देखा। फिर श्री राज जी के चरणों में सिधारे ।

साथ सौंप्या आप श्री राज को, जाहिर में श्री महाराज ।
अब हम फिरत धाम को, तुम रहो सावचेत आज ॥२३॥

अब जागनी का कार्य श्री इन्द्रावती जी ने श्री राजजी को सौंपा और जाहिरी में सुन्दरसाथ की सेवा महाराजा छत्रसाल जी को सौंप कर सुन्दरसाथ की सेवा में सतर्क रहने का आदेश दिया ।

महाराजा जी सों कहा, मैं देखत हों एक तुम ।
तिस वास्ते सेवा साथ की, सौंप चलत हैं हम ॥२४॥

महाराजा छत्रसाल जी से कहा कि सुन्दर साथ में सबसे श्रेष्ठ मैं आपको ही देखता हूं जो सेवा के कार्यभार को चला सकेंगे । इसलिए यह कार्य मैं आपको सौंपता हूं ।

Nijanand App

अब हुकुमें द्वारा खोलिया, लिया अपने हाथ हुकुम ।
दिल मोमिन के आय के, अरस कर बैठे खसम ॥२५॥

अब श्री राज जी ने जागनी का हुकम जो इन्द्रावती जी को दिया था, अपने हाथ में ले लिया और मोमिनों के दिल में आ कर अपना अर्स बना कर बैठ गये ।

अब साथ अगले और बीच के, और आखर की बीतक ।
सो सब जाहिर होत है, कहावत हुकम हक ॥२६॥

श्री इन्द्रावती जी श्री राजजी के हुकम से फुरमाती हैं कि अब सुन्दरसाथ की जागनी से पहले और बीच के तथा आखिर के सुन्दरसाथ की बीतक श्री राज जी के हुकम से जाहेर करती हूं ।

(प्रकरण ७, चौपाई ३६७)

अब तुम सुनियो मोमनों, देखो अपने कदम ।
साथ चले जिन भांत सों, देत नसीहत आतम ॥१॥

हे परमधाम के प्यारे सुन्दर साथ जी ! अब तुम अपनी रहनी को देखो । जिस तरह से पहले मोमिनों ने कुर्बानी करके हमें रास्ता चल कर बताया है, उनकी रहनी से ही नसीहत लेकर अपनी आतम को जगाओ।

कूच किया श्री बाई जी ने, आगे श्री जी साहिब ।
जीत चली सब साथ में, सब धन-धन कहें अब ॥२॥

फूलबाई जी के तन में बैठी अमलावती की आतम ने अपने तन को त्याग कर फिर दूसरे तेज कुंवरी के तन को धारण किया और सैकड़ों कष्ट सहन कर अपने धनी को रिझा कर सुन्दर साथ के बीच मिथ्या माया की बाजी को जीत कर दिखाया और सेवा करते करते दूसरे तन को श्री जी के सामने ही उनके चरणों में अर्पित कर दिया । इसलिए सुन्दर साथ इस कुर्बानी को देख कर ही उनको धन धन कहते हैं।

सम्वत सतरह सौ पचास में, बैसाख सुदि अष्टमी ।
वार बुध पोहोर दिन चढ़ते, ठौर अपने जाय जमी ॥३॥

१७५० में बैसाख सुदि अष्टमी बुधवार के दिन प्रातः नौ बजे नश्वर तन को त्याग कर अपने धनी के चरणों में समर्पित हो गई ।

सम्वत् सत्र सौ इक्यावन, असाढ़ के महिने ।
दिन चौथ पीछली रात में, धनी पहुंचे धाम अपने ॥४॥

सम्वत् १७५१ सावन वदि चौथ को प्रातः साढ़े चार बजे धाम धनी ने इस तन को छोड़कर अपना धाम, मोमिनों के दिल को बना लिया ।

Nijanand App

बार सुकर जुम्मे का, पीछली रात घड़ी दोय ।
पहुंचे अर्स अजीम को, दारूल बका कहूया सोय ॥५॥

चौथ वाले दिन शुक्रवार जुम्मे का दिन था । प्रातः पिछली रात की दो घड़ी रहती थी तो मेहराज ठाकुर इस तन को त्याग कर अपने अर्श अखण्ड परमधाम पधारे । उनका अर्श, मोमिन के दिल को कहा है।

प्रमाण : ऊपर तले अर्स ना कहूया, अर्स कहूया मोमिन कलूब ।
ए जाने रूहें अर्स की, जिनका हक मेहबूब ॥

(सिनगार, प्रकरण २३, चौपाई ७६)

जिन मोमिन को पहिचान, तिन बांधी कमर ।
सोंपी आतम कदमों, हुए सब ऊपर ॥६॥

जिन मोमिनों ने अपने धनी की पहचान कर ली थी कि हमारे धनी हमसे कभी भी जुदा नहीं हो सकते, उन्होंने अपने धनी को बिछड़ते देखकर अपने तनों को छोड़ने के लिए कमर कस ली और अपनी आतम को धनी के चरणों में समर्पित कर दिया । इस कुर्बानी से वे सुन्दर साथ में श्रेष्ठ कहलाए ।

जिन ढील खिन एक न करी, सुनके पानी किया हराम ।
हम पहुंचे सेवा मिनें, और न कोई काम ॥७॥

उस समय जिन मोमिनों ने अपने धनी का धाम चलना सुना, उन्होंने अपने को समर्पित करने में अर्थात् तन छोड़ने में एक पल की देर नहीं की और पानी भी पीना हराम समझा । श्री लालदास जी फरमाते हैं कि हम सब कार्य छोड़कर चरणों में समर्पित हो गए ।

स्वास न खाया बीच में, छोड़ी न साइत ।
उठे धाम वतन में, ए फरदा रोज क्यामत ॥८॥

अपने धनी का चलना सुनकर उस समय को हाथ से जाने नहीं दिया । अपने आप को धनी के चरणों में कुर्बान कर दिया । इसी को फरदा रोज कयामत कहते हैं ।

हम साथ देखत रहे, जिन घेर लिया घेन ।
जब आँखे खुली, ताय क्योंए ना पड़े चैन ॥९॥

हमने ऐसे भी सुन्दरसाथ देखे, जो माया में भूले रहे । जब उनको सुध आई तो वे भी धनी का बिछड़ना सहन नहीं कर सके ।

Nijanand App

दरद न आया धनी का, बिछुड़ते न उड़ी अरवाहे ।
साथ मिने तिनका, मुख ऊंचा होवे क्यों ताये ॥१०॥

जिनको धनी के बिछुड़ने पर दर्द नहीं आया और जिन्होंने अपनी अरवाह को उड़ा नहीं दिया, वो परमधाम में उठने के बाद सुन्दरसाथ में कैसे मुंह ऊंचा करेंगे ।

जीती बाजी हार दई, ए दरद बड़ा मोमिन ।
ए कहनें में न आवत, बहुत भारी होसी रोसन ॥११॥

उन मोमिनों ने अपनी जीती बाजी हार दी जिन्होंने अपना तन नहीं छोड़ा, उनके लिए यह बड़ी शर्मसारी (लानत) की बात है जो कहने में नहीं आ सकती । उन्हें बहुत बड़ा भारी गुनाह लगेगा ।

ना तो सिरदार सिरोमनि, थी बेसक पहिचान ।
पर आखर बखत फल समै, हाय हमें कछु न रह्या ईमान ॥१२॥

नहीं तो कई सुन्दरसाथ जिन्हें धनी की पहचान भी थी और सुन्दरसाथ में शिरोमणि कहलाते थे परन्तु कुर्बानी के समय मरने से डर गए और अपना ईमान खो बैठे ।

निसबत हमारी ना रही, ना तो वतन हमारो श्री धाम ।
तिन समे ना देखिया, सो छुड़ाया दज्जाल ने ठाम ॥१३॥

इस माया में फंसकर कई सुन्दरसाथ अपने धनी की निसबत को भी भूल गए और धनी के चलते समय परमधाम पर यकीन छोड़कर माया और अपने शरीर में लिप्त रहे ।

ऐसा पसु भी ना करे, जिन माया की प्रीत ।
हमसे कछू ना हुआ, कछू ना आई रीत ॥१४॥

ऐसा तो शायद पालतू जानवर भी नहीं करते । जिनको केवल सांसारिक प्यार मिलता है । हम उन पशुओं की रीति को देखकर भी धनी के वियोग में अपना तन छोड़ देने की रीति पर नहीं चल सके ।

ए रहे श्री राज के हुकमें, और न कोई उपाय ।
जान सिरोमनि क्यों रहें, पर हुकमें कछू न बसाय ॥१५॥

जो मोमिन अरवाह अर्श की हैं, वो श्री राज जी महाराज के हुकम से ही बंधे रह गए, नहीं तो सुन्दरसाथ में सिरदार मोमिन धनी के बिना कैसे रह सकते हैं लेकिन हमारा रहना और चलना धनी के हाथ में है।

Nijanand App

कहां लो कहूं मैं इनकी, धिक-धिक हुआ आकार ।
अब कहूं मैं तिनकी, जो संग चले साथ सिरदार ॥१६॥

धनी के बिना एक अंगना का जीना मानो धिक्कार का जीना होता है । अब मैं कहां तक इस बात का वर्णन करूं । अब मैं उन मोमिनों की शोभा कहता हूं जिन्होंने धनी का चलना सुनते ही अपना शरीर त्याग दिया ।

संकर हजूरी चले, और चले लालमन ।
और नारायणदास जो, कहे खास मोमिन ॥१७॥

शंकर भाई हजूरी, जो चरणामृत बांटते थे और लालमन जी और नारायणदास जी, जो खास मोमिन थे, उन्होंने शरीर त्यागा ।

गोदावरी और किसनी, संग दिया धनजी नें ।
भए आसिक दीन इसलाम पर, धाम मेले अपनें ॥१८॥

गोदावरी बहन, किस्नी बहन और धन जी भाई जो धनी के आशिक थे, उन्होंने भी तुरन्त अपना शरीर त्यागा और धनी के चरणों में पहुंच गए ।

बड़ा जस लिया जसिया, जिन छोड़े न राज कदम ।
साथ में धन धन सबों कही, जाग पहुंची आतम ॥१९॥

और जसिया भाई जो श्री राजजी के चरणों में सदा कुर्बान रहते थे, उन्होंने धनी का चलना सुनकर तुरन्त अपने को कुर्बान कर दिया । ये भी सुन्दर साथ में धन-धन हुए ।

और अम्बो बाई चलीं, थी इस्क में गरक ।
इन ऊपर मेहर मेहेबूब की, पहुंची कदमों हक ॥२०॥

अम्बो बहन, जो सदा धनी के ही प्रेम में मग्न रहती थी और धनी उन पर सदा मेहरबान थे, उन्होंने भी अपनी आत्मा को धनी के चरणों में सौंपा ।

और जो रतन बाई, चली राज के साथ ।
सांची रहे सेवा मिने, तो धनिये पकड़े हाथ ॥२१॥

और रतन बाई जो हर सेवा में सच्चे मोमिन की तरह हाजिर रहती थी वह धनी के बिना कैसे रह सकती थी । उन्होंने भी धनी के चरणों को नहीं छोड़ा और अपनी अरवाह को धनी के चरणों में समर्पित किया ।

Nijanand App

राम बाई आपा डारिया, थी सेवा में आसिक ।
जान के तो अपना, साथ रखी हक ॥२२॥

राम बाई जिसका ईमान ही केवल सेवा करना था, धनी ने उनको भी अपना जान कर चरणों में ले लिया ।

ए साथ जो संग चले, जिन सिर ऊँचा किया मोमिन ।
संसार में धन धन हुए, जिनके दिल रोसन ॥२३॥

जिन मोमिनों की आतम ने जाग्रत होकर बल पकड़ा और धनी के साथ ही अपने शरीर को त्याग दिया वे यहां भी धन-धन हैं और परमधाम में भी धन-धन होंगे ।

महामति कहे ए मोमिनों, देखों साथ कदम ।
अब इनको देख के, जगाओ अपनी आतम ॥२४॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे प्यारे सुन्दर साथ जी ! इन मोमिनों की रहनी और कुर्बानी को देखकर इनकी राह पर चलो और अपनी आतम को जगाओ ।

(प्रकरण ८, चौपाई ३९१)

अब कहूं मोमिन की, जो फिदा हुए ऊपर हक ।
इनकी सिफत न आवे सब्द में, नेक कहूं अपनें माफक ॥१॥

अब ऐसे मोमिनों की सिफत किस जुबान से कहूं, जो धनी का चलना सुनकर कुर्बान हो गए । उनकी महिमा शब्दों से परे है परन्तु अपनी बुद्धि माफक थोड़ा सा कहता हूं ।

चलना राज के पीछल, किया अपना कुरबान ।
भयो गौवच्छ पद कहिवे को, जाय लगे ब्रह्म बान ॥२॥

जिन मोमिनों की आतम परमधाम की वाणी की चोट से जागृत हो गई, उन्होंने धनी के चलते समय संसार को गौवच्छ पद के समान समझकर अपनी अरवाह को छोड़ दिया ।

भवजल मोह सागर, पार न आवे कोय ।
वास्ते दीन इसलाम के, नजरों आया सोय ॥३॥

यह मोह का भवजल एक गहरे सागर के समान है जिसकी थाह कोई नहीं जान सका । अपने पतिव्रता धर्म के पालन में उनके लिए यह संसार सागर कुछ भी नहीं रहा ।

Nijanand App

सूर कई संसार में, होत तरवारों टूक टूक ।
पर इनकी तौल न आवहीं, जो हक वास्ते हुए भूक भूक ॥४॥

इस संसार में बड़े-बड़े सूरमा हुए जो देश के लिए कट-कट कर मरे और जिनकी कुर्बानी का नाम इतिहास में आता है परन्तु ये भी उन मोमिनों की तुलना में नहीं आ सकते जो अपने धनी पर कुर्बान हुए ।

आकार अपना डारते, जरा न करी सक ।
साबित हुए मोमिन, पहुंचे कदमों हक ॥५॥

और अपना आकार त्यागते समय उनको जरा भी संकोच न हुआ । यही कुर्बानी मोमिनों की पहचान है, जो करके वे धनी के चरणों में पहुंचे ।

इनको पीछे फेरन को, बहुत करी अन्तराय ।
पर जिनकी नजर धाम में, ताको कौन फिराय ॥६॥

इन मोमिनों की नजर को माया में ही रखने के लिये कईयों ने बहुत प्रयास किया परन्तु जिनकी दृष्टि मूल मिलावे में अपने धनी के चरणों में लग जाती है, उन्हें माया में कौन रोक सकता है ?

पुकार करी इनों बहुतक, सबों को दिया पैगाम ।
बिना हक के हुकुमें, क्यों पहुंचे इसलाम ॥७॥

कई मोमिन ऐसे भी थे, जिन्होंने इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी के जाहिर होने का पैगाम भी जगह-जगह दिया और कुर्बानी भी दी, परन्तु धनी के हुक्म के बिना अपना शरीर नहीं त्याग सके ।

कूच सुनत धनीय का, विरह न किया याद ।
सोतो नहीं मोमिन, अरस अजीम की बुनियाद ॥८॥

जो अपने धनी का बिछुड़ना सुनकर उनकी याद में धनी के संग नहीं चले, उनको मोमिन कैसे कह सकते हैं क्यों कि अर्स में धनी अपनी आत्माओं के बिना और आत्मायें अपने धनी के बिना रह ही नहीं सकती ।

सुनते सब्द धनीय का, तब ही अरवाह उड़ जाय ।
ताको कहिए मोमिन, सुनते विरह उड़ जाय ॥९॥

और जो मोमिन धनी का चलना सुनते ही अपनी अरवाह को उड़ा दे, यही मोमिनों की पहचान है जो धनी के विरह में अपने शरीर को त्याग दे ।

Nijanand App

पीछे रखे आकार को, लालच वजूद के ।
सो क्यों बैठे सैंयन में, बात कहनें को ए ॥१०॥

और जो अपने आकार के सुख के लालच में शरीर त्यागने में संकोच करे, वह परमधाम का मोमिन कैसे हो सकता है ? ऐसों के लिये कहना ही क्या?

मोमिन ऐसी न करे, जो कछू होय पहिचान ।
अरवाह सो उड़ावहीं, जाको होय ईमान ॥११॥

यदि किसी मोमिन को अपने धनी की पहचान हो जाती है तो वह कभी भी अपने धनी का बिछुड़ना सहन नहीं कर सकता । जिसको धनी की पहचान का पूरा ईमान होगा, वह धनी का चलना सुनते ही अपनी अरवाह को उड़ा देगा ।

धिक धिक पड़ो तिन को, जो ए बात सुने कान ।
बिछोहा धनी धाम सों, जाको कछू नहीं पहिचान ॥१२॥

धिक्कार है उन लोगों को, जो धनी का चलना अपने कानों से सुनते रहे । जिन्हें अपने धनी की पहचान नहीं हुई, वही बिछड़ना सहन कर सकते हैं ।

तिन सनमंध अपना तोड़िया, जो था बीच बका ।
अब क्यों मुख दिखावहीं, जो बीच बजूद थका ॥१३॥

और ऐसे सुन्दरसाथ जो परमधाम के मोमिन भी हैं पर अपने वजूद के सुखों के लिए माया में रह गये, वे परमधाम में उठने पर कैसे अपना मुंह दिखायेंगे ?

ले बैठे आकार को, विरह सुनत हैं कान ।
तिनको ईमान जिन कहो, कहा रही इत जान ॥१४॥

जो आकार के सुखों में ही मग्न रहे और विरह की बातें भी सुनते रहे । यह मोमिनों की पहचान नहीं है और ऐसों को इमान वाले मोमिनों में नहीं गिनना ।

जो रहे सोहबत में, आठ पहर एक ठौर ।
तो पीछे क्यों कर रहे, जाको बात न दिल में और ॥१५॥

जो आठों पहर चौसठ घड़ी धनी की सोहबत में रहे तथा जिन के दिल में धनी के बिना और कोई बात ही नहीं आती थी, वह भी धनी का चलना सुनकर कैसे पीछे रह गए ।

Nijanand App

पर ए बात हुकम की, सो तो हाथ है हक ।
ऐसा जान बूझ क्यों करें, जिनों नहीं दिल में सक ॥१६॥

ऐसा भी धनी के हुकम से ही हुआ क्योंकि मोमिनों का चलना या रहना तो हक के हाथ में है इसलिए जिसको अपने धनी की पहचान में कोई सन्देह नहीं होता अर्थात् ईमान होता है, वह जान बूझकर धनी से कैसे बिछुड़ सकता है ।

जो रहे सो हुकमें, और चले बीच इजन ।
मोमिन रखे जिन वास्ते, मजल जाहिर सबों रोसन ॥१७॥

उस समय जो चले, वे भी धनी के हुकम से तथा जो नहीं चल सके, वे भी धनी के ही हुकम से । उन मोमिनों को धनी ने ही अपने काम के वास्ते संसार में अपने हुकम से रखा ।

सम्वत् सत्रह सै इक्यावना, भादों वदी चतुर्दसी के दिन ।
प्रणाम कर सब साथ को, पहुंचे हक कदमों मोमिन ॥१८॥

सम्वत् १७५१ भादों वदी चतुर्दशी के दिन श्री लाल दास जी सब सुन्दरसाथ को प्रणाम कर अपने धनी के चरणों में समर्पित हुए अर्थात् शरीर छोड़ दिया ।

मैं कहूं नाम तिनके, जिन सुनत होइए पाक ।
उड़ाय बजूद अपना, थे हक कदमों खाक ॥१९॥

अब मैं उन मोमिनों के नाम कहता हूं जो अपने धनी की सेवा में मर मिटे थे और जिन्होंने धनी का चलना सुनकर अपने वजूद को छोड़ दिया, जिनके नाम सुनने से ही नीच से नीच जीव भी मोक्ष प्राप्त कर लेता है ।

बल्लभदास एक इनमें, दूजे हैं केसवदास ।
तीसरा था मथुरा, ए तीनों मोमिन खास ॥२०॥

ऐसे खास मोमिनों में श्री वल्लभ दास, केशवदास और मथुरा भाई जी हैं ।

राम कुंवर केसव संग, प्रसादी इनके संग ।
हमीरा स्त्री इनकी, थी धाम धनी के अंग ॥२१॥

और श्री रामकुंवर, केशव जी, प्रसादी भाई और इनके साथ इनकी स्त्री हमीरा बहन थी । ये भी धनी के खासलखास मोमिनों में से हैं ।

Nijanand App

और जो था साहमन, पाचवां नरसिंहदास ।
सन्तदास जो इन संग, ए छेहू मोमिन खास ॥२२॥

और चौथे शाह मन जी, पांचवें नरसिंह दास जी, छठे सन्तदास जी ये समस्त खासलखास मोमिन हैं।

पूरबाई और खड़गो, और केसरबाई नाम ।
कासी चल्या तीसरे दिन, चल्या असऊ पीछे इन काम ॥२३॥

पूरबाई , खड़गो बहन, केसर बाई और काशी बाई, असऊ भाई इन सभी ने तीसरे दिन धनी के विरह में तड़प-तड़पकर शरीर त्यागा ।

श्री महामति कहे ए मोमिनों, धरो कदमों पर कदम ।
तुम आय धाम धनी से, जगाओ अपनी आतम ॥२४॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ ! तुम भी अपने धनी से बिछुड़ कर परमधाम से आए हो । ऐसे मोमिनों की कुर्बानी की चाल को सुनकर अपनी आत्मा को जगाओ ।

(प्रकरण ९, चौपाई ४१५)

पहिले कहों श्री देवचन्द्र जी, कबीले के नाम ।
जो कोई कदमों लगे, भये दाखिल निज धाम ॥१॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फरमाते हैं कि अब सबसे पहले श्री देवचन्द्र जी के सांसारिक कबीले वालों के नाम कहता हूं जिन्होंने उनकी पहचान की और चरणों में आये ।

श्लोक : देवापिः सन्तनोर्भाता, मरूश्चेक्ष्वाकुवंशजः ।
कलाप ग्राम आसाते, महायोग बलान्वितः ॥

मूल श्री देवचन्द्र जी, उतरे हैं अरस से ।
वास्ते खास उम्मत के, विहार किया साथ में ॥२॥

मूल श्री देवचन्द्र जी, जिनके अन्दर श्री श्यामा जी की आत्मा है और परमधाम से ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते आये हैं और जिन्होंने अपना जीवन सुन्दरसाथ के वास्ते व्यतीत किया ।

सनमंध जाहिर का, हुआ लीलबाई से ।
सेवा करी सनेह सों, सोभा दई राजें इनें ॥३॥

श्री मती लीलबाई जी को इस संसार में पत्नी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिन्होंने अपने पति श्री देवचन्द्र जी की बड़े प्रेम से सेवा की । श्री राजजी महाराज ने इन्हें इनकी पत्नी बनने की शोभा दी ।

Nijanand App

तिनके उदर प्रगट भये, बिहारी जी है नाम ।
सफर किया स्त्रीय नें, पहुंची अपने ठाम ॥४॥

श्री देवचन्द्र जी के सुपुत्र श्री बिहारी जी हुए । लीलबाई जी ने सेवा करते हुए ही अपना शरीर त्यागा और धनी के चरणों में पहुंची ।

जमुना बहिन कहियत हैं, थारो मेघो भाई दोय ।
जोरू ठकुरानी थारे की, नागजी बेटा कहूया सोय ॥५॥

श्री देवचन्द्र जी की सुपुत्री एवं बिहारी जी की बहन जमुना जी थी जिनका सांसारिक सम्बन्ध थारो भाई के साथ हुआ । थारो भाई का एक भाई मेघा भाई था, जमुना बहन जेठानी थी और उनका बेटा नागजी था ।

धनियानी मेघेय की, भाईत्रि याको नाम ।
जमुनाबाई दीकरी, श्री देवचन्द्र जी की इस ठाम ॥६॥

मेघाभाई की पत्नी का नाम भाइत्रि था । जमुना बाई श्री देवचन्द्र जी की सुपुत्री थी ।

कृष्णा स्त्री बिहारीजीय की, धनयानी घर जोय ।
नागजी की जोरू, रंगबाई कही सोय ॥७॥

बिहारी जी की पत्नी का नाम कृष्णा बहन था और उनके साले का नाम नाग जी था और रंगबाई नागजी भाई की पत्नी थी ।

यह कबीला लौकिक, और अलौकिक कहों इत ।
जो कोई ल्याया ईमान, करने को खिजमत ॥८॥

यह सांसारिक परिवार वालों के नाम कहे हैं । अब उन आत्माओं के नाम कहता हूं जिन्होंने श्री देवचन्द्र जी की पहचान की और चरणों में समर्पित हुए ।

प्रथम कहों हरिदास की, राधावल्लभी नाम ।
उनकी पहले खिजमत, श्री देवचन्द्र जी किये काम ॥९॥

सबसे पहले हरिदास जी जो राधावल्लभी मार्ग में थे, जिनकी सेवा करके श्री देवचन्द्र जी ने राधावल्लभी मार्ग को अपनाया था । जब श्री राजजी महाराज श्री देवचन्द्र जी के अन्दर विराजमान हुए तो हरिदास जी ने इनकी पहचान करके तारतम लिया ।

Nijanand App

जब भई इन्हें पहिचान, तब फेर ग्रहे कदम ।
सुख दिया सेवा मिने, सौंप दई आतम ॥१०॥

जब हरिदास जी को श्री देवचन्द्र जी के स्वरूप की पहचान हो गई तो उन्होंने इनके चरणों में अपनी आतम सौंप दी और सेवा का सुख लिया ।

माता वृन्दावन की, धनियानी हरिदास ।
वृन्दावन ईमान ल्याइया, करी सेवा खास ॥११॥

हरिदास जी की पत्नी थी और लड़के का नाम वृन्दावन था । वृन्दावन जी ने पहचान करके तारतम लिया और उनकी आत्मा जाग्रत हो गई ।

मूली वृन्दावन की, नातो जोरू खसम ।
एह आई साथ में, जाग खड़ी आतम ॥१२॥

वृन्दावन की पत्नी का नाम मूली बाई था । मूली बाई धनी की पहचान करके अपनी आतम जगा कर सुन्दर साथ में शामिल हुई ।

बेटा वृन्दावन का, कह्या नाम नरहर ।
और माता वृन्दावन की, कछु इनको भई खबर ॥१३॥

वृन्दावन जी का एक लड़का था जिसका नाम नरहर था और वृन्दावन की माता जी को थोड़ी सी पहचान हुई ।

महामति कहे ऐ मोमिनों, ए साथ बड़ो विस्तार ।
पर कछुक कहों हुकुमें, मेहर धनी निरधार ॥१४॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फरमाते हैं कि अब श्री राजजी के हुकम से जिन पर मेहर हुई और जो अपने धनी की पहचान करके चरणों में आये, उनके नाम कहता हूं । वैसे तो सुन्दर साथ का विस्तार बहुत है ।

(प्रकरण १०, चौपाई ४२९)

पहिले दीन इसलाम में, गांग जी भाई धरे कदम ।
सेवा करी श्री देवचन्द्र जी की, कदमों सौंपी आतम ॥१॥

सबसे पहले गांग जी भाई ने पार की बानी सुन कर उनको धाम-धनी पहचान कर उनके चरणों में अपनी आतम समर्पित की ।

Nijanand App

कहों तिनका कबीला, जो दाखिल हुए निजधाम ।
दीदार श्री देवचन्द्र जी के, खिज़मत के किये काम ॥२॥

अब गांग जी भाई के कबीले में उनके नाम कहता हूं जिन्होंने श्री देवचन्द्र जी की पहचान करके सेवा की और अपनी आतम को जगाया ।

माता गांगजी भाई की, गंगाबाई है नाम ।
श्री देवचन्द्र जी तिनके, किए पूरे मनोरथ काम ॥३॥

गांगजी भाई की माता का नाम गंगाबाई था । श्री देवचन्द्र जी महाराज ने उनकी आतम को जगा कर उनकी सब मनोकामनायें पूर्ण की ।

भानबाई धनियानी, रहे गांगजी के घर में ।
श्री देवचन्द्र जी की सेवा, पूछ करे उनसे ॥४॥

गांगजी भाई की धर्मपत्नी का नाम भानबाई था, जिसको श्री देवचन्द्र जी महाराज की पहचान नहीं हुई और सेवा भी गांगजी भाई से पूछ-पूछ कर करती थी ।

बेटा कहिए स्यामजी, कछु न बोय ईमान ।
चरचा सुनता बहुतक, बिना अंकूर न भई पहिचान ॥५॥

गांग जी भाई के बड़े लड़के का नाम स्याम जी था । वह भी कोरा जीव था । चर्चा तो बहुत सुनता था लेकिन अंकूर के न होने से धनी श्री देवचन्द्र जी की पहचान करके सुख नहीं ले सका ।

बहू भानबाई की, अजबाई है नाम ।
सेवा लई सिर ऊपर, करे हमेसा काम ॥६॥

स्याम जी की पत्नी का नाम अजबाई था । उन्होंने धाम के धनी श्री देवचन्द्र जी महाराज की पहचान करके घर में सेवा का कुल भार अपने सिर पर ले लिया था ।

बेटा दूजा मान जी, करता था खिजमत ।
गांग जी भाई के वास्ते, हाजर रहवे इत ॥७॥

गांगजी भाई के दूसरे बेटे का नाम मान जी था जिनकी आतम जागृत हो गई, वे सेवा में समर्पित हुए और अपने पिता श्री के स्थान पर कारोबार करके सेवा में हाजिर रहते थे ।

Nijanand App

हीरबाई का बेटा, धनजी उनका नाम ।
बहिन जो है बालबाई, ए थी बीच इसलाम ॥८॥

गांगजी भाई का एक भाई खेता भाई था जिनकी धर्मपत्नी का नाम हीरबाई था और उनके लड़के का नाम धनजी था । गांगजी भाई की बहन का नाम बाल बाई था, उन्होंने सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी की पहचान करके श्री निजानन्द सम्प्रदाय को ग्रहण किया था ।

भौजाई श्री हीरबाई, रहे सेवा में सनमुख ।
कै बिध सेवा करके, इनों लिया अति सुख ॥९॥

गांगजी भाई की भाभी हीरबाई थी, वह उनके पास ही रहती थी । जब श्री देवचन्द्र जी महाराज श्री गांग जी भाई के घर पधारे और प्रचार प्रसार का कार्य प्रारम्भ हुआ तो उन्होंने खूब-खूब सेवा करके सुख लिया ।

भाई गोबिन्द जी रहे, ना दाखिल निज धाम ।
जुदा रहे सबसे, आवे न किसी काम ॥१०॥

गांग जी भाई का एक भाई गोबिन्द जी भी था । वह न दीन के काम आया न दुनियां के ।

जीवराज साथी साथ में, वासना बाई तान ।
माता उनकी बछाई, भई पूरी पहिचान ॥११॥

एक जीवराज साथी साथ में आये जिनकी वासना का नाम तान बाई था, उनकी माता का नाम बछाई बहन था । उसको भी पूरी पहचान हुई और उन्होंने तारतम ज्ञान लिया ।

सालो रहे सामिल, गणेस उनका नाम ।
धनियानी रहे गोमती, करी सेवा इस ठाम ॥१२॥

गांगजी भाई के साले का नाम गणेश भाई था । उनकी धर्म पत्नी का नाम गोमती बहन था । उसने भी उस समय सेवा का सुख लिया ।

हीरबाई की बेटी, जसोदा है नाम ।
बेटी की बेटी, राजबाई इस ठाम ॥१३॥

हीरबाई जो गांगजी भाई की भाभी थी, उनकी बेटी का नाम यशोदा था । यशोदा बहन की बेटी का नाम राजबाई था जिन्होंने सेवा का सुख लिया ।

Nijanand App

देवर मानबाई का, पारप्यो है नाम ।
देवरानी जसोदानी, करे सेवा का काम ॥१४॥

यशोदा बहन की देवरानी का नाम मानबाई था और उनके देवर का नाम पारप्यो था, जिन्होंने सेवा का सुख लिया ।

दो बेटी स्यामजी की, हरबाई लाड़बाई ।
पावत नित दीदार, आगे खिलौने सुखदाई ॥१५॥

गांगजी भाई के सुपुत्र स्याम जी की दो बेटियां थी जिनका नाम हरबाई और लाड़बाई था । वे श्री देवचन्द्र जी के सामने खिलौनों की तरह खेलती रहती थी । उन्होंने भी सुख लिया ।

मानजी का बेटा, सुखबाई की वासना ।
परखी श्री देवचन्द्र जी ने, जान घर अपना ॥१६॥

मानजी के बेटे की वासना का नाम सुखबाई था । इनको परमधाम का साथी जान कर सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने इनकी आत्मा को परखा था ।

समय श्री देवचन्द्र जी, चरचा करते जब ।
इत काहू को बोलने की, ताकत न रहवे तब ॥१७॥

श्री देवचन्द्र जी महाराज जब अपने श्रीमुख से चर्चा करते थे तो किसी को किसी भी प्रकार का संशय नहीं रह जाता था । इसलिये कोई भी कुछ बोल नहीं सकता था ।

चरचा जोस में करें, कहें भाव से मुख ।
या समै इन साथ को, कह्यो न जाय सुख ॥१८॥

सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के अन्दर श्री राज जी महाराज की साक्षात् बैठक होने के कारण जोश में वे चर्चा करते थे और हर बात को भाव के साथ दर्शाते थे तो उस समय जिन सुन्दरसाथ ने उस चर्चा का सुख लिया, उसकी महिमा किस मुख से कही जाय ।

भाव काढ़ दिखावहीं, सब चरचा को रूप ।
बरनन करें श्री राज को, सुन्दर रूप अनूप ॥१९॥

सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी भाव भीने शब्दों के साथ चर्चा सुनाते थे और विशेषकर श्री राज श्री ठकुरानी जी के सुन्दर, अनुपम रूप का दोनों समय वर्णन करते थे ।

Nijanand App

ब्रज रास लीला को, बड़ो दिखावें बोझ ।
सब्द साखी सास्त्र सब, रहस्य दिखावें कर खोज ॥२०॥

पारब्रह्म अक्षरातीत श्री राज जी महाराज की अपनी आत्माओं के साथ ब्रज और रास की प्रेम की लीलाओं के वर्णन का महत्व श्री मद्भागवत और शास्त्रों के प्रमाणों के साथ बताते थे क्योंकि उस प्रेम की लीला को संसार में कोई जानता ही नहीं था ।

अंग में बड़ो उमंग, साथ मिलावन को ।
एक नया कोई जो आवत, तो उमंग न मावे अंग मों ॥२१॥

श्री देवचन्द्र जी के दिल में जागनी करने की बहुत उमंग थी इसलिए कोई नया सुन्दरसाथ जब आता था तब उसे देखकर उनकी प्रसन्नता की सीमा का पारावार नहीं रह जाता था ।

अब कहों कबीला श्री मेहेराज का, करी श्री देवचन्द्र जी मेहर ।
आवे नहीं हिसाब में, ए जो करी फेर फेर ॥२२॥

अब सतगुरू श्री देवचन्द्र जी की मेहर से श्री मेहराज ठाकुर और उनका कबीला कैसे चरणों में आया, उस मेहर का वर्णन बार-बार नहीं हो सकता है ।

केसो ठाकुर पिता कहियत, माता बाई धन ।
श्री इन्द्रावती बाई की वासना, सौंपा धन तन मन ॥२३॥

श्री मेहराज ठाकुर के पिता जी का नाम श्री केशव ठाकुर और माता श्री का नाम धनबाई था । इनके अन्दर परमधाम की श्री इन्द्रावती बाई की वासना थी । इन्होंने सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी को अपने धाम का धनी मानकर अपना तन मन धन समर्पित किया ।

स्त्री घरों फूलबाई, दूजी श्री बाई तेज ।
श्री जी साहिब जी धाम धनीय को, इनने पाया सहेज ॥२४॥

श्री मेहराज ठाकुर की धर्म पत्नी का नाम श्री फूलबाई था । दूसरी बार फूलबाई जी की आतम ने ही श्री तेजकुंवरी जी के तन को धारण किया और सांसारिक पति होने के नाते से धाम के धनी श्री जी साहिब को सरलता से ही पा लिया ।

भाई गोवर्धन कह्या, जासों पहिले श्री देवचन्द्र जी मिलाप ।
भई प्राप्त श्री मेहेराज को, हकें मेहर करी आप ॥२५॥

श्री मेहराज ठाकुर के बड़े भाई गोवर्धन ठाकुर थे जो इनके कबीले में सबसे पहले सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के चरणों में समर्पित हुए । फिर श्री राजजी महाराज की मेहर से और बड़े भाई की सोहोबत से श्री मेहराज ठाकुर सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के चरणों में आये ।

Nijanand App

वासना ठाकुर गोवर्धन की, गुणवन्ती बाई नाम ।
और भाई ऊधव जी, गोविन्द जी इस ठाम ॥२६॥

श्री गोवर्धन ठाकुर की वासना का नाम गुणवन्ती बाई था । उनके छोटे भाई का नाम उद्धव ठाकुर था और एक चचेरे भाई श्री गोविन्द जी भी थे ।

और चतुर्भुज कह्या, घर धनियानी पदमा ।
ए आए हैं साथ में, थे कबीले बीच जमा ॥२७॥

श्री गोबिन्द जी के एक दूसरे भाई श्री चतुर्भुज जी थे । श्री गोवर्धन ठाकुर जी की धर्मपत्नी का नाम पदमा था । जिनके नाम ऊपर कहे गए हैं, यह श्री मेहेराज ठाकुर के कबीले में थे जो सतगुरू श्री देवचन्द्र जी की पहचान करके सुन्दर साथ में शामिल हुए ।

स्त्री ऊधवजीय की, नाम बाई भान ।
ए साथ में आई नहीं, कर न सकी पहचान ॥२८॥

श्री उद्धव ठाकुर की धर्मपत्नी का नाम भानबाई था जो सतगुरू श्री देवचन्द जी की पहचान नहीं कर सकी और साथ में शामिल नहीं हुई ।

और भाई ठाकुर श्री स्यामलजी, ए पीछे ल्याए ईमान ।
सीताबाई सेवा मिने, है प्रेम जी को पहचान ॥२९॥

श्री मेहेराज ठाकुर के बड़े भाई श्री सांवलिया ठाकुर थे जिन्होंने बाद में हब्से में उनकी पहचान की और चरणों में शीश झुकाया । श्री प्रेम जी और सीताबाई जी पहचान करके धनी के चरणों में आये ।

और बाई सवीरा, यह आई साथ मिने ।
प्रेम जी की सोहबत से, ए फल पाया इनने ॥३०॥

और प्रेम जी की सोहबत से सबीरा बाई ने श्री राजजी महाराज की पहचान करके पूरा सुख लिया।

विस्न जी भाई प्रेमजीय का, आया नहीं साथ में ।
पर पाया दीदार, श्री जी की सोहबत से ॥३१॥

प्रेम जी का भाई विष्णु भाई था वह सतगुरू श्री देवचन्द जी के समय में सुन्दर साथ में शामिल नहीं हुआ । बाद में श्री जी साहिब जी की सोहबत से उसको पहचान हुई ।

Nijanand App

और आई पूरबाई, साथ बेटा पीताम्बर ।
बेटे कानजी नान जी तिनके, हुए कुरबान श्री जी पर ॥३२॥

और बहन पूरबाई आई । उनके साथ उनका बेटा पीताम्बर भाई आया । उनके दो बेटे कान्ह जी और नान्ह जी थे । यह दोनों श्री जी साहिब जी की पहचान करके चरणों में समर्पित हुए ।

माता कान जी नान जी की, बाई कही रतन ।
आई परना बीच में, कहावत है मोमिन ॥३३॥

पीताम्बर भाई की पत्नी का नाम रतन बाई था जो कान्ह जी और नान्ह जी की माता थी । वे परमधाम की खास आत्मा थी जिन्होंने पन्ना जी में आकर श्री जी के चरणों में ही तन छोड़ा ।

हरवंस के घर में, मेघबाई है नाम ।
हरखबाई की वासना, श्री देवचन्द्र जी कही इस ठाम ॥३४॥

श्री मेहेराज ठाकुर के सबसे बड़े भाई हरवंश ठाकुर थे जिनकी धर्मपत्नी का नाम मेघबाई था । मेघबाई की वासना का नाम हरखबाई था जिन्हें स्वयं श्री देवचन्द जी ने परखा था ।

गोकुलदास चलिया, आया था साथ में ।
ए श्री जी का कबीला, जो लगा था इनसें ॥३५॥

जब श्री जी साहिब नवतनपुरी में थे, तो उस समय एक सुन्दर साथ श्री गोकुलदास जी भी आयें जिन्होंने वहीं पर अपना शरीर छोड़ दिया था । ऊपर जो नाम दिये गये हैं वे श्री मेहराज ठाकुर जी के परिवार के सम्बन्धी थे ।

रहे रूद्रो जूनागढ़ में, था ए दूकानदार ।
करी सेवा श्री देवचन्द्रजी की, जान के धनी निरधार ॥३६॥

अब जूनागढ़ के एक सुन्दरसाथ जो दुकानदार थे, उनका नाम रूद्रो भाई था । उन्होंने सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी को धाम का धनी पहचान कर सेवा का सुख लिया ।

कानजी और थावर, और पदमसी जीवानाम ।
जसोदा और कानबाई, पहुंचे ए निज धाम ॥३७॥

सर्वश्री कान्ह जी, थावर भाई, पद्मसी और जीवा भाई, यशोदा बाई और कान बाई ने भी धाम के धनी की पहचान की और सुन्दर साथ में शामिल हुए ।

Nijanand App

डोसा और नैनबाई, मेनबाई और मानबाई ।
करी सेवा श्री देवचन्द्र जी की, सादी दीदार की पाई ॥३८॥

सर्वश्री डोसा भाई और नैनबाई, मेनबाई और मानबाई ने भी धाम धनी श्री देवचन्द्र जी के दर्शनों का सुख लिया और सेवा में समर्पित हुए ।

एक भाई महावजी, और जो परसोत्तम ।
रामजी कोठारीय के, इन्हों जाना महातम ॥३९॥

श्री राम जी कोठारी के दो भाई जिनका नाम महाव जी और पुरूषोत्तम था । इन्होंने सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी की चर्चा का महत्व समझ कर पहचान की और सुन्दर साथ में शामिल हुए ।

और भाई जयमल कह्या, और जोरू इनकी ।
ए पीछे आए साथ में, सेवा बिहारी जी की करी ॥४०॥

जयमल भाई और उनकी धर्मपत्नी ने बिहारी जी के समय में साथ में शामिल हो कर सेवा का लाभ लिया ।

और लछो कायथ, ए ल्याई ईमान ।
चरचा सुनने आवत, ना इन्हें भई पहिचान ॥४१॥

एक लच्छो बहन कायस्थ जाति की थी । वह चर्चा तो ईमान से ही सुनने आती थी, किन्तु उनको धाम धनी की पूर्ण पहचान नहीं हुई ।

नारायन सोनी साथ में, और आए लीलाधर ।
ए सेवा में आवत, रस पीवत श्रवनों कर ॥४२॥

श्री नारायण सोनी और लीलाधर ये दोनों चर्चा श्रवण कर चर्चा का रसपान करते थे और नित्य सेवा में शामिल होते थे ।

भाटिया एक भीम जी, था जोरू समेत ।
ए ल्याया ईमान, चरचा नित सुनत ॥४३॥

एक भीम भाई भाटिया अपनी धर्म पत्नी सहित नित्य चर्चा सुनते थे और चर्चा सुन कर सुन्दर साथ में ईमान सहित शामिल हुए ।

Nijanand App

मूल जी की धनियानी, राय कुंवरबाई नाम ।
तारतम सुन्या तिनने, पूरे मनोरथ काम ॥४४॥

श्री मूल जी भाई की धर्म पत्नी राय कुंवर बाई ने चर्चा सुन कर पहचान की और तारतम लिया । श्री राज जी महाराज ने उनकी सब कामनाऐं पूर्ण की ।

गुगलन मां दीकरी, हरबाई नाम तिन ।
कदमों श्री देवचन्द्र जी के, थी दाखिल मोमिन ॥४५॥

हरबाई की माता का नाम गुगलन था । वह श्री देवचन्द्र जी की चर्चा सुन कर साथ में शामिल हुई और सेवा का लाभ उठाया ।

दीप में जो साथ है, एक कंसारा जयराम ।
और धनियानी इनकी, थी दाखिल निज धाम ॥४६॥

दीप बन्दर में एक साथी श्री जयराम कंसारा और उनकी धर्म पत्नी चर्चा सुन कर सुन्दर साथ में शामिल हुए ।

गणेस और स्त्री इनकी, भोजबाई बाई देव ।
भोज मूंजो गंगाबाई, इनों करी बड़ी सेव ॥४७॥

सर्वश्री गणेश भाई और उनकी धर्म पत्नी, भोजबाई और देवबाई, भोजोबाई, मूंजो बाई और गंगाबाई ने धाम धनी की पहचान करके सेवा का अपार सुख लिया ।

जीवो गंगो और ग्वाल, इनों सौंपी आतम ।
ए दीव में का साथ था, जिनों सुन्या तारतम ॥४८॥

सर्वश्री जीवो भाई, गंगो भाई और ग्वाल भाई ये दीपबन्दर के रहने वाले सुन्दरसाथ थे जिन्होंने सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी से चर्चा सुन कर तारतम लिया और साथ में शामिल हुए ।

मूलो पुहो करना ब्राह्मण, हासबाई बाई बेन ।
ए चरचा में आवत, श्री देवचन्द्र जी निरखे नैन ॥४९॥

ब्राह्मण मूलो पोहोकरना, हांसबाई और बेनबाई ये नित्य चर्चा सुनने आते थे । सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने मेहर करके इनकी आत्मा को जगाया और इनकी मनोकामना पूर्ण की ।

Nijanand App

और कायस्थ अखई, रहे नौतन पुरी मिने ।
मल्लो प्राग मंडई मिने, हरबीर कबीले समेत अपने ॥५०॥

और नौतनपुरी में अखई भाई कायस्थ थे जो सुंदरसाथ में शामिल हुए । मल्लो पराग मंडई के रहने वाले थे तथा हरवीर भाई कबीले सहित सुन्दर साथ में शामिल हुए ।

और दूसरा हरबीर, आया अपने कुटुंब परिवार ।
तारतम सुन्या तिनने, पहुंचा परवरदिगार ॥५१॥

एक और हरबीर भाई थे । उन्होंने अपने परिवार सहित चर्चा सुनकर तारतम लिया और सुंदर साथ में शामिल हुए ।

राधाबाई सोम बाई, सोम आई मंडई मिने ।
और बाई कुंवर, सामिल कबीले सें ॥५२॥

राधाबाई, सोमबाई और कुंवरबाई मंडई के रहने वाले थे । सतगुरू श्री देवचन्द्र जी के मुखारविन्द से चर्चा सुनकर सुन्दर साथ में शामिल हुए ।

और नाथा जोसी ठट्ठे मिने, संग बड़ा महावजी ये ।
और लाला कायस्थ, और कायस्थ धना उसके ॥५३॥

नाथा जोशी, बड़ा महाव जी, लाला कायस्थ और धन्ना कायस्थ सभी ठट्ठे नगर के रहने वाले सुन्दर साथ थे जो सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी की चर्चा सुनकर सुन्दर साथ में शामिल हुए ।

और साथ बहुत हैं, गाम सहर और और ।
मैं थोड़े नाम लिखे, इनों कहे जायेंगे और ठौर ॥५४॥

और भी बहुत सारे सुन्दर साथ थे जिनकी नगर-नगर और गांव-गांव में जागनी हुई । उनमें से थोड़े के ही नाम लिखे गए हैं । बाकी नाम प्रसंग के अनुसार लिखे जाएंगे ।

महामति कहे ए साथ जी, इन साथ की सिफत ।
सोतो आगे होयेगी, बखत रोज क्यामत ॥५५॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फरमाते हैं कि उन सुन्दरसाथ, जिन्होंने उस समय सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी की चर्चा सुनकर उनकी पहचान की, उनकी सिफत तो परमधाम में ही हो सकेगी।

(प्रकरण ११, चौपाई ४८४)

Nijanand App

कुरान पुरान की साखी

सिपारे बारमें मिने, पाने चौबीस में ।
तफसीर के तीन सौ एक, तुम देखियो तिन सें ॥१॥

कुरान के बारहवें सिपारे तथा २४ वें पन्ने में तथा तफसीरे हुसैनी के ३०१ वें पन्ने में देख लेना। उसमें लिखा है कि जब ईसा रूह अल्लाह आएंगे तो अल्लाह तआला उन्हें खुद आकर इलमे लदुन्नी देंगे ।

श्री देवचन्द्र जी सरूप को, हकें दिया तारतम नूर ।
तिनका विस्तार कयामतें, होयेगा बड़ा मजकूर ॥२॥

श्री देवचन्द्र जी के स्वरूप, श्री श्यामा महारानी जी को साक्षात् श्री राजजी महाराज ने श्यामजी के मंदिर में दर्शन देकर अपनी पहचान कराई और तारतम ज्ञान दिया । इस बात का विस्तार आगे कयामत के दिन बहुत अधिक होगा ।

मूल वेद कतेब की, साहिदियां लिखी सबन ।
सो आय मिली सब इतहीं, ताय मोमिन करें रोसन ॥३॥

शास्त्रों में और कुरान में श्री देवचन्द्र जी (ईसा रूह अल्लाह) के आने की बहुत सारी गवाहियां लिखी हैं, जो अब मोमिनों के द्वारा जाहिर होंगी ।

कागद जो भागवत का, ले आया सुक मुनी ।
इनका अर्थ ब्रह्म सृष्टि, खोलें जान अपनी ॥४॥

और श्रीमद् भागवत में जो श्री शुकदेव मुनि ने दसवें स्कन्ध में ब्रह्म मुनियों की पहचान कही है, उस लीला का अर्थ ब्रह्मसृष्टि ही अपनी लीला समझ कर खोलेंगी क्योंकि वह उनकी ही लीला है ।

और कागद ल्याइया, महम्मद अलेह सलाम ।
सो बीतक श्री देवचन्द्र जी की, लिखी अल्ला कलाम ॥५॥

और महंमद साहब भी जो कुरान को लाये हैं, उसमें भी श्री देवचन्द्र जी (ईसा रूह अल्लाह) के आने की सब बीतक लिखी है ।

जनम से आखर लग, जो लों मोमिन पहुंचे धाम ।
सो सारी हकीकत इनमें, सब पूरे मनोरथ काम ॥६॥

परमधाम से मोमिनों के संसार में आने और वापस परमधाम जाने तक चौथे, पांचवें, छठे और सातवें दिन की मोमिनों की लीला के सब प्रमाण कुरान में हैं जिनको सुनने से सारे संशय दूर हो जाएंगे ।

Nijanand App

एक सौ बीस बरस लों, करी दज्जाल सों जोर ।
यहां लों इनसे लड़ा, करके बड़ा सोर ॥७॥

ईसा रूह अल्लाह जब अपनी उम्मत के साथ आयेंगे तो वे दो तनों में बैठकर लीला करेंगे । उनकी दज्जाल के साथ (१२० वर्ष सं० १६३८ से १७५८ तक) लड़ाई हुई । उसी के अनुसार जब ईसा रूह-अल्लाह जाहिर हुए तो दज्जाल ने समय-समय पर अनेकों अड़चनें डाली ।

पहिली लड़ाई महम्मद साहिब सों, फेर उनके यार ।
ता पीछे श्री देवचन्द्र जी सों, करी खबर परवरदिगार ॥८॥

जब महंमद साहब ने तथा उनके यारों ने पहली बार अरब में खुदा को जाहिर किया तो दज्जाल ने बहुत फितने (अड़चने) उठाये । जब श्री देवचन्द्र जी ने अक्षरातीत को जाहिर किया तो दज्जाल ने अनेकों संकट ढाये।

श्री जी साहिब जी और गिरोह सों, लड़ा इन दरम्यान ।
बीच बिहारी जी के बैठ के, तहां किया बड़ा कुफरान ॥९॥

तब श्री जी साहिब और मोमिनों ने पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत को जाहिर किया तो दज्जाल ने बिहारी जी के अन्दर बैठकर संकट ढाये और कुफर किया ।

इन सारों की साहिदी, लिखी अल्ला कलाम ।
सो मोमिन बीतक अपनी, आगे खोले खलक आम ॥१०॥

इन सब घटनाओं की गवाही कुरान में लिखी है । अब मोमिन कुरान की उन गवाहियों से श्री राजजी की पहचान करायेंगे ।

विरोध सारी विस्व का, भागत इन बीतक ।
सबको पहिचान होवहीं, पहुंचे कदमों हक ॥११॥

सारे विश्व में जो जुदा-जुदा धर्मों का विरोध चल रहा है, ब्रह्मसृष्टि ही श्री कुलजम स्वरूप की वाणी के अनुसार हिन्दुओं को, हिन्दुओं के ग्रन्थों से क्षर-अक्षर-अक्षरातीत के भेद बताकर तथा मुसलमानों को ला, इलाह और अल्लाह के भेद बता कर एक पारब्रह्म अक्षरातीत श्री जी साहिब जी की पहचान करा कर एक धनी की पहचान करायेगी ।

प्रमाण : जो कछु कहया कतेब ने, सोई कहया वेद ।
दोऊ बन्दे एक साहेब के, पर लड़त बिन पाये भेद ॥

(खुलासा १२/४२)

Nijanand App

सेवे सब मोमिन को, पहिचान के निसबत ।
भूल माने अपनी, बखत हुआ क्यामत ॥१२॥

तब श्री कुलजम स्वरूप की वाणी को पहचान कर सब दुनियां अक्षरातीत की उम्मत (ब्रह्ममुनि) मान कर उन की सेवा करेगी और अपनी भूल स्वीकार करेगी, उसी समय को आखिरत का वक्त कहा है।

सिताबी चारों खूट में, पसर गई पहिचान ।
तब सब कोई दौड़िया, ले ले के ईमान ॥१३॥

जब श्री जी साहिब जी के हुकम से उनकी पहचान चारों तरफ सारे जहान में फैल जायेगी तब सब कोई ईमान लेकर उनके चरणों में दौड़ता आयेगा ।

प्रमाण : नूर इमाम इन भांत का, कबूं जो निकसी किरन ।
तो पसरसी एक पल में, चारों तरफों सब धरन ॥

(सनंध, प्र० २२, चौपाई ५०)

श्री देवचन्द्र जी सरूप की, मूल जनम की बीतक ।
सम्बत सोलह सै अड़तीसे, सो सत्रह सौ बावन लों हक ॥१४॥

श्री देवचन्द्र जी के स्वरूप की पहचान की, जन्म से लेकर अब तक की बीतक कहता हूं जो संवत् १६३८ से लेकर १७५२ तक है ।

मास आसो सुदी चतुर्दसी, इत माह सुदि चौदस ।
बरस एक सौ दस, ऊपर मास चार सरस ॥१५॥

आसो सुदी चतुर्दशी से लेकर माह सुदी चौदस तक ११० वर्ष और चार महीने ऊपर होते हैं।

सो सब में जाहिर भई, छिपी न रही लगार ।
दिन क्यामत के इनसे, करी जाहिर परवरदिगार ॥१६॥

यह सब ईसा रूह अल्ला के दो जामे पहनने की हकीकत कुरान में कही थी और कयामत के निशान लिखे थे । वह सब अल्लाह तआला ने इमाम मेंहदी के तन में बैठ कर जाहिर कर दिया और कोई भी बात छिपी नहीं रही ।

मसरक मगरब से, दौड़ी आवत खलक ।
ताको नीयत माफक, दीदार पावत हक ॥१७॥

हिन्दू और मुसलमान श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार इमाम मेंहदी का आना सुन कर भाग-भाग कर चरणों में आयेंगे किन्तु जिनकी जैसी भावना होगी, उसके अनुसार ही उन्हें दर्शन और सुख मिलेगा।

Nijanand App

जो जैसा मनोरथ, करत है मन में ।
पूरन सब ही होत है, सोहबत मोमिनों से ॥१८॥

जो जैसी चाहना मन में लेता है, मोमिनों की कृपा से उनकी सब मुरादें पूरी हो जाती हैं ।

महामति कहे ए साथ जी, ए मेहर है हक ।
जैसा ईमान जिन का, होत तिन माफक ॥१९॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते है कि हे सुन्दर साथ जी ! यह श्री राज जी की मेहर तुम्हारे वास्ते हुई है । अब जिनका जैसा यकीन होगा, उसके अनुसार उसको वैसा ही फल मिलेगा ।

(प्रकरण १२, चौपाई ५०३)

दोनों स्वरूपों का मिलाप

श्री देवचन्द्र जी के अमल में, साथ को सुख हुआ अंग ।
तिनकी चरचा सुनते, मावत नाहीं उमंग ॥१॥

सदगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के समय में जब सुन्दरसाथ उनके मुखारबिन्द से बड़ी उमंग के साथ चर्चा सुनते थे, तो उनके सुख का पारावार नहीं था ।

गांग जी भाई सेवहीं, उच्छव रसोई नित ।
नई नई भांतों सेवहीं, हुआ अंग में उमंग इत ॥२॥

गांग जी भाई हर रोज नई से नई उच्छव रसोइयां अनेकों प्रकार से करते थे । उनको सेवा करने की अति उमंग थी ।

कोई नया जो आवहिं, बीच इन निज धाम ।
तो श्री देवचन्द्र जी सुख पावहीं, सो केता कहों इस ठाम ॥३॥

यदि चर्चा सुनकर निजानन्द सम्प्रदाय में कोई नया सुन्दर साथ आता था तो श्री देवचन्द्र जी को अपार सुख होता था, जिसका इस मुख से वर्णन नहीं हो सकता ।

कोई नए साथी को ल्यावहीं, समझाय के दीन में ।
तिन ऊपर राजी होवहीं, क्या नेकी करों इन सें ॥४॥

यदि कोई सुन्दरसाथ किसी को क्षर-अक्षर-अक्षरातीत के भेद समझा कर श्री देवचन्द्र जी के चरणों में लाता था तो श्री देवचन्द्र जी महाराज उस लाने वाले सुन्दर साथ पर बहुत प्रसन्न होते थे और सोचते थे कि मैं इसके साथ कौन सा उपकार करूं ।

Nijanand App